राग - श्री

थाट - पूर्वी
समय - सायंकाल
वादी - पंचम (प)
संवादी - षड्ज (सा)
जाति - षाडव / संपूर्ण
प्रकृति - वैराग्य रस प्रधान
वर्ज्य - आरोह में गांधार
विकृत - रिषभ, धैवत कोमल
आरोह - सा रे मे प, मेध्नी सां
मध्यम तीव्र
या मेपनीसां
अवरोह - सां नी रें नी ध प मे ध मे ग रे ग रे सा
राग का मुख्य अंग - रे रे प मे ध मे ग, रे ग रे सा

विशेष विवरण - इस राग के आरोह - अवरोह में मतभेद है। प्रचार मे "मे प नी सां" और मेध्नीसां इस प्रकार प्रयोग किया जाता है। आगे से चली आनेवाली शास्त्रीय प्रणाली के अनुसार मेपनीसां होना चाहिये, किन्तु प्रतिष्ठित गायको और उनकी शिष्य-परंपरा को जब गाते सुनते हैं, तब वे मेध्नीसां का ही प्रयोग करते हैं। राग की प्रकृति रस वैराग्यरस प्रधान है। इसलिये मेपनीसां का प्रयोग वैराग्यरस को हानि पहुँचाता है। राग की प्रकृति मेध्नीसां से ही स्पष्ट होती है। कोमल रिषभ का प्रयोग करते समय कण स्वर ना आ जाय उसका खास ध्यान रखना चाहिये। तात्पर्य यह है, कि रिषभ खडा ही प्रयोग में रखना चाहिये। कुछ अंश में आंदोलित हो, तो चलेगा। आंदोलित अधिक हो जाने से राग को हानि होने की पूरी संभावना है। गान समय संध्याकाल होने से पूर्वांग प्रधान गिना जाता है। इसलिये मंद्र और मध्य सप्तक में ही इस राग का स्वरुप स्पष्ट करना चाहिये। वास्तव में यह राग मंद्र और मध्य में बहुत कम गाया जाता है। तार सप्तक में जब तक रिषभ स्वर का विशिष्ट प्रयोग न हो, तब तक वैराग्य भाव स्पष्ट नही होता है। कोमल रिषभ का प्रयोग एक से अधिक बार गा कर करना आवश्यक है। तथापि 'सा' के बाद 'नीध्प' इस प्रकार आलाप करना हो तो "नी रें नी ध्प" इस प्रकार रिषभ का प्रयोग करना चाहिये। वैसे तो यह राग बीन में अधिक शोभा देता है। ध्रुपद धमार में भी शोभा देता है। मींड प्रधान होने के कारण ऊपर के स्वर से नीचे के स्वर की तरफ दोनों ओर मींड लेनी चाहिये। तानों का बहुत मर्यादित स्वरुप रखना चाहिये। तानों सपाट तान इस राग में लेनी ही नही चाहिये। दो-दो, तीन-तीन, चार-चार, स्वरों का प्रयोग करना चाहिये। आलाप करते समय

Scanned by CamScanner

श्री

खटका और हरकत का कभी प्रयोग नही करना चाहिये।

स्वर - विस्तार - (1) सा--- नीरे--सा-- सा--नीरे--नीध़नीरे-- सा--- सा--- नीसा--- नीरे-- रेऽनी ध़प-- मंध़नीरे --नीध़ऽप-- मंध़ नीध़नीरे-- नीध़प--मंध़नीसा-- नीरे--सा--।

(2) सानीरे-ग-- ग--रे--नीरे-ग-- ग-रे- नीध़नीरेग-रे-- सा--सानीरे-नीध़नीरे- ग---ग--- रे-मं-ग---नीरे---सा--। (3) ग--रे नीरे-ग--नीरेग-- रे-सा मं---ग--रे प---रे ग---रे-- मं-- रे---प--- पमंगरे ग--रे नी-सा--- नीरेगरे प--- प--- मंरे-- रे प-रे-मं--रे ग--ग--रे-सा--।

(4) सा--रे- रे-सा-- रे-रे ग-रे सा--- रे रे मं-- गरे ग--रे-रे-सा, रेरे प---प--मंरेग-रेप--प-पमंध़-मंग--रेग--रे प--रेग--रे--सा---।

(5) सारेमं प--- प-- मंध़--- प--- प--रेप--मं ध़--प--प--मंपध़प रेप--रे-रेग--रेध़--मंग--रेप--रे-मं--ग-रे--सा सानीरे नीध़प प--रे गरे सा---- (6) रे--रेप-मंध़--नी-ध़-प---ध़--प-- नी-ध़ प-- मंध़ नीरे-- नीध़-- प पमंगरे ग--रे-प-मंध़-नीधरे नीध़प-- मंध़नी--ध़नीरे--नीध़-प--पमंध़--मंगरे--ग--रे-- सा--- (7) रेरे प-मंध़ नी-ध़-प-- मंध़नीरे--नीध़--प--- मंपध़प मंध़नी--रे--नीध़प-- मंपनीसा-- सानीरें-नीध़प- मंध़नीसारें--रें-- सा-- सानीरें--नीध़प मंध़नीसारे--रें सा-- सानीरें--नीध़प मंध़नीसारे---रें सा-- सानीरें नीध़प रें मं-ध़प रेनी--रें--सा-- मंध़नी सा-- रेरे--सा-- सानीरें नीध़प मंध़मंग रेप--रेसा रेग रे--सा--

(8) तान प्रकार - (1) रेंरेसानी ध़नीरेग, गगरेसा, नीरेसा--नीरेसा-नीरेगग रेंसानीरे नीध़मंध़ नीरेगग रेंसानीरे सा--- ध़नीसारे नीसारेनी सारेनीसा रेंरेसानी ध़नीरेरे गगरेसा, नीरेसा--। (2) रेरेरेरे गगरेसा, रेगमं, मंगगरे रेसानीरे नीध़मंध़ नीरेगग, रेसानीरे, सा---, साध़नीरे नीध़मंध़ नीरेगग, रेसानीरे सा--- साध़नीरे गगरेसा, नीरेसा--, रेरेरेरे, गगरेसा, नीरेगमं, मंगरेसा, गगरेसा, नीरेसा-

(3) सानीध़नी, सारेनीसा, रेरेसानी ध़पमंध़ नीसारेरे सा--- मंध़नीसा रेरेगग रेसानीरे सा--- मंध़ध़नी नीरेरेग गमंमंग, गरेरेसा, नीरेनीध़, मंध़ध़नी नीरेसा-।

(4) नीरेगमं मंगरेसा सासासासा, रेरेरे पपप, मंमंमं गगग, रेरेरे, सासारेरे पपमंमं, ध़ध़मंमं, गगरेरे, सा---, सासारेरे, पपमंमं, ध़ध़मंमं, गगरेरे, सा--रेरेसा-, सासारेरे पपमंमं, ध़ध़नीनी, रेरेनीनी, ध़ध़पप, मंमंध़ध़, मंमंगग, रेरेगग, रेरेसासा।

(5) सारेरेप, पमंमंग, गरेरेसा सारेरेंध़ ध़पपपमं, मंमंगरे, रेसासारे रेंनीनीध़ध़पपमं मंगगरे रेसानीसा रेरेरेनी नीध़ध़प, पमंमंग, गरेरेसा, सारेग गरेरेसा सारेरेग, गरेरेनी नीध़ध़प, पमंमंग, गरेरेसा

Scanned by CamScanner

छोटा-ख्याल

श्री

ताल - झपताल

स्थाई - प्रभु के चरण कमल निशदिन सुमरे रे,
भावधर सुध भीतर गव जलधि तर रे।

अंतरा - जेहि जेहि धरत ध्यान पावत समाधान,
हरंग कहे मान, अब हुँ चित धर रे॥

	स्थाई		
सा नी नीरे	रे ग रे	रे सा	रे सा सा
प्र भु-	के - च	र ण	क म ल
×	2	0	3
नी सा	रे सा सा	नी ध प	सा - -
नि श	दि न सु	म र	रे - -
मा नी सा	सा प प प	ध मे प	ध प प
भा -	व ध र	सु ध	भी त र
मेप पध	ध मे मे गरे	ग रे	सा सा सा
भ- व-	ज ल धि-	त र	रे - -
×	2	0	3
	सां अंतरा		
प मे प	नी नी सां	सां सां	सां - सां
जे हि	जे हि ध	र त	ध्या - न
×	2	0	3
सां नी सां	रें रें सा	नी सां	नी ध प
पा -	व त स	मा -	धा - न
प मे प	सां नी सां रें	रें -	सां - सां
हर	रं ग क	हुँ -	मा - न
सां नी सां	नी ध प	मे गरे	ग रे सा
अ ब	हुँ चि त	ध र-	रे - -
×	2	0	3
धी ना	धीं धीं ना	ती ना	धीं धीं ना

Scanned by CamScanner

ध्रुपद

श्री

ताल - सुलताल

स्थाई - गौरी अरधांग, नाचत संगीत शंकर त्रिपुरारी

अंतरा - त्रिशुल डमरु नाग, व्याघ्रांबर, अंबर, गज चरमाम्बर परिधान कर ॥

स्थाई

रें -	सां -	नी नी	सां नी	ध प
गौ -	री -	अ र	- धां	- ग
मं -	प प	- सां	- नी	ध प
ना -	च त	- सं	- गी	- त
प ध	मं धारे	ग रे	ग रे	सा -
शं -	क र	त्रि पु	रा -	री -
X	0	2	3	0

अंतरा

प पमं	ध प	नी नी	सां सां	- सां
त्रि शु-	- ल	ड म	रु ना	- ग
नी -रें	रें गं	रें सां	रें नी	ध प
व्या -	घ्रा -	म्ब र	अं -	ब र
मं प	नी नी	सां -	रें रें	सां सां
गज	च र	मा -	म्बर -	- -
			या -	म्ब र
प सां	नी ध	मं गरे	ग रे	सा -
प रि	धा -	- -	न क	र -
X	0	2	3	0
धा धा	दीं ता	कीट धा	कीट तक	गदी गन

Scanned by CamScanner